नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

हिंदी विरोध की राजनीति क्यों ?

तमिलनाडु के बाद महाराष्ट्र में जिस तरह से हिंदी भाषा के खिलाफ विरोध की सियासत तेज हुई है, वह न केवल चिंताजनक है, बल्कि देश की भाषिक एकता और सामाजिक सौहार्द के लिए भी एक गंभीर खतरे की घंटी है. त्रिभाषा फॉर्मूले के बहाने, जिस तरह मराठी अस्मिता के नाम पर हिंदी को 'थोपा गया' बताकर विरोध किया जा रहा है, वह तर्क से अधिक राजनीतिक मजबूरी की उपज प्रतीत होती है. यह विरोध उस राज्य में हो रहा है जिसकी राजधानी मुंबई हिंदी सिनेमा का केंद्र है, जहां लाखों लोग हिंदी बोलते, समझते और लिखते हैं. यही नहीं, महाराष्ट्र के शिक्षा ढांचे में हिंदी की उपस्थिति कोई नई बात नहीं है. ऐसे में सवाल उठता है कि अचानक हिंदी विरोध क्यों और किसके लिए? इसकी पृष्ठभूमि में देखें तो यह राजनीतिक दलों की खोई हुई ज़मीन को फिर से पाने की रणनीति दिखती है. शिवसेना (उद्धव गुट) और मनसे के लिए 'मराठी अस्मिता' एक भावनात्मक तुरुप का पत्ता रहा है, लेकिन जब यह अस्मिता किसी दूसरी भारतीय भाषा के खिलाफ खड़ी की जाती है, तब यह विचार मराठी संस्कृति का नहीं, बल्कि अवसरवादी राजनीति का प्रतीक बन जाता है. यह विडंबना ही है कि जो नेता कल तक नई शिक्षा नीति को समर्थन दे रहे थे, वही आज उसके खिलाफ प्रदर्शन की अगुवाई कर रहे हैं.

त्रिभाषा फॉर्मूला देश में भाषाई समरसता को बढ़ावा देने की मंशा से लाया गया था. मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और वैश्विक भाषा को समन्वित करने की एक नीति. लेकिन इसमें भी हिंदी की जगह अन्य भारतीय भाषा चुनने का विकल्प सरकार ने दिया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इसे 'थोपना' नहीं कहा जा सकता. बावजूद इसके, हिंदी विरोध की राजनीति यह संकेत देती है कि मुद्दा भाषा नहीं, बल्कि सत्ता की राजनीति है. भाषाएं जोड़ने का कार्य करती हैं, तोड़ने का नहीं. दुर्भाग्य से, भारत में राजनीतिक लाभ के लिए भाषाओं को भी खेमों में बांटने की परंपरा बनती जा रही है. जो दल अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का विरोध नहीं करते, वे भारतीय भाषाओं को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर रहे हैं, यह एक विडंबना है और राष्ट्रीय एकता के लिए गंभीर चुनौती भी. इस समय आवश्यकता है एक संतुलित दृष्टिकोण की. हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु – हर भाषा हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है. इन्हें एक-दूसरे के विरोध में खड़ा करना नहीं, बल्कि साथ लेकर चलना ही भारत की मूल आत्मा है. भाषाएं संस्कृति का आधार हैं, लेकिन जब वे राजनीति का औजार बन जाती हैं, तो केवल संस्कृति ही नहीं, देश भी घायल होता है. बहरहाल, महाराष्ट्र में गैर-मराठी भाषी लोगों की संख्या और प्रतिशत अलग-अलग स्रोतों और अनुमानों के आधार पर भिन्न हो सकती है, लेकिन 2011 की जनगणना के आंकड़ों से कुछ स्पष्ट जानकारी मिलती है.

2011 की जनगणना के अनुसार, महाराष्ट्र की कुल जनसंख्या में से लगभग 69.93 फीसदी लोगों की मातृभाषा मराठी थी. इसका मतलब है कि लगभग 30.07 फीसदी आबादी गैर-मराठी भाषी थी. मुंबई जैसे बड़े शहरी क्षेत्रों में गैर-मराठी भाषी आबादी का प्रतिशत राज्य के औसत से अधिक हो सकता है. कुछ रिपोर्टों में मुंबई में 40 फीसदी मराठी भाषी और 60 फीसदी गैर-मराठी भाषी होने का भी उल्लेख है, जिसमें हिंदी बोलने वाले सबसे बड़े समूह हैं. जागरूक नागरिकों को इस खेल को पहचानना होगा और भाषाई सद्भाव की उस विरासत को संजोकर रखना होगा, जिसने भारत को विविधता में एकता का अद्भुत उदाहरण बनाया है.

महर्षि व्यास से एआई तक गुरु का बदलता परिदृश्य

डॉ संजय कुमार पाठक

> ऋषि वेद व्यास से एआई तक की यह यात्रा हमें सिखाती है कि ज्ञान का स्वरूप चाहे कितना भी बदले, उसके केंद्र में गुरु की आवश्यकता अपरिवर्तनीय है. आज जब समाज विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ऊँचाइयों को छू रहा है, वहीं मानवता और संवेदनशीलता की नींव डगमगा रही है. तकनीकी निर्भरता का यह युग हमें तेजी से सुविधा की ओर ले जा रहा है, लेकिन साथ ही आने वाली पीढ़ी का बौद्धिक विकास, विश्लेषण क्षमता और आत्मनिर्भर चिन्तन भी प्रभावित हो रहा है. अब शिशु अवस्था से ही मनुष्य केवल टूल-ड्रिवन बनता जा रहा है, जो विचार करने के बजाय खोजने का आदी हो गया है. यह स्थिति केवल सामाजिक, सांस्कृतिक संकट का संकेत भी है. ऐसे में गुरु-शिष्य परंपरा ही सामाजिक स्थायित्व, नैतिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक पुनर्संस्कार दे सकती है. समाज के समग्र परिष्कार का मार्ग केवल वहीं से निकलेगा.

महर्षि वेद व्यास ने महाभारत, पुराणों और भारतीय ज्ञान-परंपरा को संरचित किया, वे गुरु परंपरा के मूल प्रतीक हैं. उनकी भूमिका मात्र ज्ञान देने की नहीं, बल्कि धर्म, नीति, चेतना और सामाजिक संतुलन स्थापित करने की थी. वहीं दूसरी ओर आज का युग एआई का है जहाँ एक क्लिक करते ही ज्ञान का भंडार उपलब्ध है, लेकिन वह ज्ञान प्रेरणा नहीं बन पाता, दृष्टि नहीं देता, और जीवन का मार्गदर्शन नहीं करता. महर्षि वेद व्यास से लेकर एआई तक गुरु की भूमिका कैसे बदली? क्या बदलनी चाहिए? और क्या नहीं बदलनी चाहिए? इन प्रश्नों का उत्तर हमें उस संक्रमणकालीन यात्रा में मिलेगा जो व्यास से शुरू होती है और एआई तक पहुँचती है.

मुगल आक्रांता महमूद गजनवी के साथ 1017 में भारत आए अलबरूनी ने अपने संस्मरण 'किताब-उल-हिन्द' में लिखे. इसमें अलबरूनी ने लिखा कि मैंने अपने भारत-भ्रमण के दौरान वहाँ के हिंदुओं में तीन विशेषताएँ देखीं, पहला वहां का हिन्दू झूठ नहीं बोलता, दूसरा उसे अपनी मौत से डर नहीं लगता और तीसरा उसे अपनी ज्ञान परम्परा और शास्त्रों पर अगाध विश्वास है. हम सभी के अनुभव में भी आता है कि अब तीनों ही परिस्थितियां विपरीत हो चुकी हैं.

समाज में व्याप्त दुष्प्रवृत्तियों का आधिकारिक रूप से बीजारोपण 1835 में मैकाले ने अपनी विषाक्त शिक्षा प्रणाली के माध्यम से किया था. उसने अपनी शिक्षा नीति के माध्यम से समाज के मानस में 'EEE' (English, Education, Employment) फार्मूले को प्रतिस्थापित कर दिया, जिसके फलस्वरूप संस्कृत, संस्कार और गुरुकुल जैसी भारत की मूल शिक्षा परंपराएँ धीरे-धीरे अप्रासंगिक होती चली गईं. शिक्षा का उद्देश्य युक्तकरी से हटकर केवल नियुक्तिकरी बन गया. आज़ादी के बाद यह स्थिति और विकृत हो गई, मैकाले की सोच में मदरसे और मार्क्स की विचारधारा भी जुड़ गई, जिससे भारतीय समाज के स्व का भाव विलोपित होता गया. इसका परिणाम यह हुआ कि समाज अपनी प्राचीन गौरवशाली परंपराओं को भूलकर हीनभावना से ग्रस्त हो गया.

भारत केवल एक भू-भाग नहीं, बल्कि अध्यात्म का पर्याय है. यदि भारत को पुन: भारत बनाना है, तो हमें अपनी हजारों वर्षों पुरानी जड़ों से जुड़ना होगा. इसके लिए गुरु-शिष्य परंपरा, संस्कृत, गुरुकुल, परिवार, समाज और शिक्षा इन सभी संस्थाओं का गहन परिष्कार अनिवार्य है. जब हर प्रश्न का उत्तर इंटरनेट और एआई से मिलने लगा है, तब गुरु की आवश्यकता पर प्रश्न खड़े होना स्वाभाविक है, परंतु इसके प्रत्युमत्तगर में यह भी स्पष्ट है कि एआई सूचना दे सकता है पर बोध नहीं, वह तथ्य बता सकता है किन्तुर सत्य का बोध नहीं करा सकता. एआई ज्ञान दे सकता है पर विवेक नहीं. गुरु तो ज्ञान को दृष्टि में बदलता है और दृष्टि को जीवन में उतारता है. एआई युग में गुरु की भूमिका अब चेतना के संरक्षक के रूप में और भी महत्वनपूर्ण हो गई है.

वर्तमान शिक्षा में चरित्र निर्माण का तत्व गौण हो गया है. बचपन से ही बच्चों को केवल प्रतिस्पर्धा, रैंक, करियर और सफलता की भाषा सिखाई जा रही है, जबकि संयम, सहनशीलता, आदर, विनम्रता जैसे मूल्य धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं. गुरु की पुनर्प्रतिष्ठा की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि संस्कारों के बिना शिष्य गुरु को समझ नहीं सकता और बिना श्रद्धा के गुरु का प्रभाव नहीं बनता. आज का छात्र शिक्षा को सेवा नहीं, बल्कि उत्पाद मानने लगा है. फीस देने के बाद ज्ञान का रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट माँगने वाला समाज, गुरु को आचार्य नहीं, सेवाप्रदाता मान बैठा है. जब तक शिक्षा व्यभवसाय बनी रहेगी, तब तक छात्र और शिक्षक के बीच श्रद्धा का सेतु नहीं बन सकेगा. श्रद्धा तभी जागती है जब शिक्षक केवल ज्ञान नहीं, जीवन दर्शन भी साझा करता है.

(लेखक भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख हैं)

डायरी

प्रगति का आधार नवाचार और समावेश

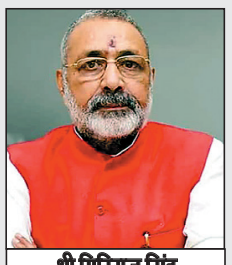

श्री गिरिराज सिंह
केंद्रीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार

हम वस्त्रों की बात अक्सर व्यापार की भाषा जैसे निर्यात, घाटा और अधिशेष के रूप में करते हैं. लेकिन यह संकीर्ण दृष्टिकोण उस पैमाने से चूक जाता है जो वास्तव में काम कर रहा है. भारत के वस्त्र क्षेत्र की ताकत केवल उसके विदेशी शिपमेंट में ही नहीं है. यह कहीं ज़्यादा स्थायी चीजों में निहित है. बढ़ती जनसंख्या, एक ऐसा घरेलू ईंजन है जो धीमे होने से इनकार करता है और यह विरासत और नवाचार दोनों के उभरते हुए स्वभाव को दर्शाता है. यह 143 करोड़ भारतीयों द्वारा संचालित है जो अपने पहनावे, अपने घरों और अपनी परंपराओं में आराम, पहचान और आकांक्षा बनाए रखते हैं.

इस क्रांति का प्रसारण नहीं किया गया. इसे बुना गया. जहां दुनिया डिजिटल सफलताओं और बुनियादी ढांचे में तेजी को ट्रैक कर रही थी, वहीं भारत के करघों पर कुछ शांत और गहरा सामने आ रहा था. जिस को कभी विरासत उद्योग के रूप में खारिज कर दिया गया था आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में उसे लचीलेपन, नवाचार और गौरव की शक्ति में बदल दिया गया है. भागलपुर के चमकते रेशम से लेकर पानीपत के पुनर्चक्रित धागों तक, परिवर्तन धीर, स्थिर और स्थायी है.

यह पुनरुत्थान नहीं है. यह पुनर्जागरण है. 2047 तक एक विकसित भारत के निर्माण के लिए नींव को कंक्रीट और इस्पात से आगे ले जाना होगा. उन्हें समुदायों, आजीविका और सांस्कृतिक निरंतरता पर आधारित होना चाहिए. वस्त्र क्षेत्र की तुलना में इस दृष्टिकोण को कहीं और अधिक स्पष्ट रूप से महसूस नहीं किया गया है. 4.6 करोड़ लोगों के साथ दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता होने के नाते, यह एक उद्योग से अधिक है. यह कौशल, पहचान और अवसरों का जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है. कभी पिछड़ा समझे जाने वाला यह उद्योग धीरे-धीरे आधुनिक आर्थिक इंजन में बदल गया है. अब पारंपरिक बुनाई वैश्विक बाजारों में प्रवेश कर रही है, जबकि तकनीकी वस्त्र एयरोस्पेस और कृषि में अपनी पैठ बना रहे हैं. और जमीनी स्तर पर, प्रत्येक करघा और चरखा गरिमा, नवीनीकरण और शांत शक्ति की गहरी कहानी दर्शाता है.

विकास का एक दशक: आंकड़े जो बताते हैं एक कहानी : जब हमारी सरकार ने 2014 में कार्यभार ग्रहण किया था, तो भारत का वस्त्र क्षेत्र विरासत में निहित एक ऐसे चौराहे पर खड़ा था जो वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में दिशाहीन था. कभी ठहराव से चिह्नित, वस्त्र क्षेत्र के पैमाने और संरचना को समर्थ के तहत लक्षित कौशल, कपास उत्पादकता मिशन, पीएलआई योजना और पीएम मित्र पार्क के जरिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के मिशन के रूप में नए युग के निवेश के माध्यम से फिर से बुना गया है.

भारत के वस्त्र क्षेत्र में रोजगार 2014 में 3 करोड़ से तेजी से बढ़कर आज 4.6 करोड़ हो गया है, जिससे कुशल और अकुशल श्रम को अवशोषित करने के अवसर और क्षमता दोनों में मजबूत विस्तार हुआ है. घरेलू मांग में वृद्धि और उत्पादन की तेजी से प्रेरित होकर बाजार का आकार 112 बिलियन डॉलर से बढ़कर 176 बिलियन डॉलर हो गया है. परिधान निर्यात लंबे समय से इस क्षेत्र की आधारशिला है, वह 14 बिलियन डॉलर से बढ़कर 18 बिलियन डॉलर हो गया है, जो मूल्यवर्धित उत्पादन में लगातार लाभ को दर्शाता है. काफी समय से लंबित भारत-यूके एफटीए को आखिरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में अंतिम रूप दिया गया है. यह भारत के श्रम-प्रधान वस्त्र क्षेत्र के लिए विनिर्माण और निर्यात के एक वैश्विक केंद्र के रूप में राष्ट्र के उत्थान के लिए द्वार खोलकर निर्णायक बढ़त का वादा करता है.

> लेकिन ये मात्र आंकड़े नहीं हैं बल्कि उससे कहीं बढ़कर हैं. वे एक रणनीतिक रीसेट का संकेत देते हैं. अस्थायी उपायों से दीर्घकालिक दृष्टिकोण की ओर बढ़ते हुए, हमारी सरकार ने मानव निर्मित रेशों, नए युग के रेशों और तकनीकी वस्त्रों को अपनाने के लिए उद्योग के दायरे को उसके कॉटन कोर से आगे बढ़ाया है. जिन क्षेत्रों को कभी अनदेखा किया गया था, वे अब वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हैं. यह विजन अब केवल घरेलू धागों तक सीमित नहीं है. यह भारत के वस्त्रों को लचीलेपन, कौशल और स्थिरता के साथ वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने पर आधारित है. यह परिवर्तन संयोग से नहीं हुआ है. यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रित शासन, साहसिक सुधारों और अटूट प्रतिबद्धता का परिणाम है.

अब जीपीएस पर भी होने लगा साइबर अटैक

गत सप्ताह दिल्ली से जम्मू जाने वाली फ्लाइट को वापस लौटने के लिए बाध्य होना पड़ा. ईरान से लगी होर्मुज की खाड़ी के मुहाने पर कुछ सप्ताह पहले 2 टैंकर टकरा गए. जेद्दा के पास एक कंटेनर जहाज हादसा हो गया. यह सब इसलिए हुआ क्योंकि जीपीएस सिग्नल्स पर साइबर अटैक हुआ था. इसमें जीपीएस (जियोग्राफिकल पोजीशनिंग सिस्टम) में हस्तक्षेप कर उसे जाम कर दिया जाता है, जिसे स्पूफिंग कहा जाता है. इस तरह की दखलंदाजी से विश्व के हवाई और समुद्री परिवहन के लिए खतरा पैदा हो गया है. सैनिक या नागरिक परिवहन इसके निशाने पर आ सकते हैं. किसी विमान के जीपीएस की स्पूफिंग की गई तो वह दूसरे विमान से टकरा सकता है या जमीन पर गिर सकता है. जलयान भी समुद्र में भटक सकते हैं. 2024 में विश्व में रोज 700 स्पूफिंग के मामले हुए. यदि एयर ट्रैफिक कंट्रोल या बंदरगाह के संचालन में जीपीएस पर साइबर अटैक हुआ तो सारा सिस्टम बिगड़ जाता है. सड़क यात्रा करने में लोग जीपीएस पर निर्भर रहने लगे हैं. इस पर साइबर अटैक होने से ट्रैफिक जाम हो सकता है और परिवहन प्रणाली में रुकावट आ सकती है. विमान और जलयान जीपीएस हस्तक्षेप के खतरे से निपटने के लिए अपनी वैकल्पिक प्रणालियों का इस्तेमाल कर सकते हैं. विमान में इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम (आईएनएस) के तहत जाइरोस्कोप और एक्सिलरोमीटर के जरिए विमान चालक अपनी पोजिशन को पहचान सकता है. बीएचएफ के जरिए पायलट को नेविगेशन का निर्देश मिल सकता है. आधुनिक जलयानों में आटो पायलट होता है जो जीपीएस के आधार पर सही मार्ग पर ले जाता है लेकिन यदि साइबर अटैक या स्पूफिंग की आशंका हुई तो राडार और लाइटहाउस की मदद से कप्तान व नाविक खुद जहाज का संचालन कर सकते हैं. भारत में इसरो ने एनएवीआईसी का विकास किया है, जो देश की सीमा से 1500 किलोमीटर दूर तक सैटेलाइट से सही दिशा मार्गदर्शन करता है.

निशानेबाज

लोणीकर ने दिया जनता को ज्ञान मानना होगा सरकार का एहसान

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, सरकार जनता से टैक्स लेकर सरकारी खजाना भरती है. उसी में से सारी जनकल्याण योजनाएं चलती हैं तथा मंत्रियों और सरकारी अधिकारियों का वेतन भत्ता भी दिया जाता है. इतने पर भी पूर्व मंत्री और बीजेपी विधायक बबनराव लोणीकर ने केंद्र सरकार की आलोचना करने वाले युवाओं को फटकारते हुए कहा कि तुम्हारे कपड़े-जूते, मोबाइल, पिता की पेंशन हमारी सरकार की देन है. तुम्हारे पिता को बुआई के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 6,000 रुपए दिए हैं. तुम्हारी मां, बहन और पत्नी को लाडकी बहीण योजना की राशि हमारी सरकार ने दी है.

हमने कहा, लोगों की भलाई और वंचित-कमजोर लोगों की मदद करना सरकार का कर्तव्य है. इसके लिए एहसान क्यों जताना चाहिए? पूर्व मंत्री लोणीकर ने अपनी जेब से तो यह सब नहीं दिया है. उपकार करो, लेकिन गिनाओ मत ! नेकी कर दरिया में डाल जैसी उदार भावना रहनी चाहिए. पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, लोणीकर ने

मक्खन लगाने की बजाय सरकार की आलोचना करने वाले युवाओं को तीखी लाल मिर्च की खुराक दे दी. जब सरकारी योजनाओं का फायदा लेते हो तो मुंह बंद रखो. अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर सरकार की आलोचना मत करो. रवैया ऐसा होना चाहिए- तुमको जो पसंद है वो बात कहेंगे, तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे. जिसका दिया खा रहे हो, उसके साथ नमक हरामी मत करो. आलोचना करनी है तो विपक्ष की करो. लोणीकर ने युवाओं को सरकार का उपकार याद दिलाया है. इसके लिए कभी तीखे शब्द भी कहने पड़ते हैं. बाद में लोणीकर ने कहा कि मैं गलत नहीं हूं फिर भी मैं माफी मांगता हूं.

हमने कहा, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बिगड़ी बात संभालते हुए कहा कि हम जनता के मालिक नहीं, बल्कि सेवक हैं. प्रधानमंत्री मोदी भी खुद को प्रधान सेवक कहते हैं. पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक कवि रहीम बहुत दान दिया करते थे, लेकिन नजरें नीचे झुकाकर. वह मानते थे कि देने वाला ईश्वर है और वह सिर्फ निमित्त हैं. पूछने पर रहीम ने कहा- देनहार कोऊ और है, भेजत सो दिन-रैन, लोग भरम हम पर करें, याते नीचे नैन. उपनिषद में कहा गया है- अयं निज: परोवेति गणना लघु चेतसाम, उदार चरितां तु वसुधैव कुटुम्बकम ! इसका अर्थ है- यह मेरा है, यह दूसरे का है, ऐसी गणना तुच्छ मन रखने वाले लोग करते हैं. जिनका मन विशाल है उनके लिए संपूर्ण वसुंधरा कुटुंब के समान है. बाएं हाथ को पता नहीं चलना चाहिए कि दाहिने हाथ ने क्या दिया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11950 - डॉ. सागर खादीवाला

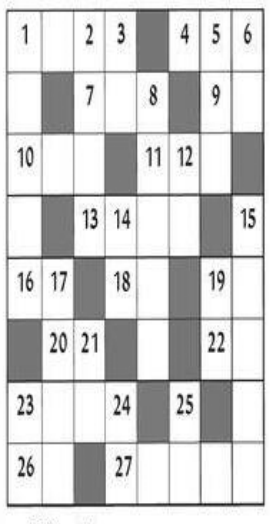

बाएं से दाएं
1. कृष्ण जिन्होंने गोवर्धन पर्वत को धारण किया था 4. श्रीकृष्ण, परमेश्वर 7. कामदेव (सं.) 9. शराब, मदिरा (उर्दू) 10. तलवार की धार पर नाचनेवाला (सं.) 11. चेहरा, मुख 13. नामक, नाम धारण करने वाला 16. रिक्त, खाली 18. आकाश, बादल 19. खोया हुआ, अप्रसिद्ध 20. लोग, प्रजा 22. गोंद, वह गुण जिससे कोई वस्तु चिपकती हो 23. वह वन जो तपस्वियों के रहने अथवा तपस्या करने के योग्य हो 26. वश में 27. रंभा नामक दैत्य का पुत्र जिसे दुर्गा ने मारा था किया हुआ, अपने को वश में करने वाला

ऊपर से नीचे
1. सिंह के समान पराक्रमी मनुष्य, नृसिंह नामक विष्णु का अवतार 2. धम शब्द उत्पन्न करते हुए गिरना 3. दांत, दंत (सं.) 5. दोष विचार उपद्रव आदि दबाना 6. आयु 8. नौ प्रकार की भक्ति 12. मोटे सूतों का बिछावन 14. इच्छा, इरादा, विचार 15. साथ में यात्रा करने वाला (उर्दू) 17. राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव (उर्दू) 19. फूल, दीये की बत्ती का जला हुआ अंश 21. नया, नूतन 23. तुम्हारा (सं.) 24. गीला, आर्द्र 25. अरुणोदय की लालिमा, प्रभात

Solution 11949

अ	ल	क	नं	दा	■	ह	श्र
म	य	■	■	स	म	■	म
ल	■	त	म	■	हा	■	दा
ता	मी	र	■	नौ	का	य	न
स	ना	■	नि	ल	य	■	■
■	र	■	रू	खा	■	द	शा
आ	■	ज	प	■	पु	ला	व
पा	रा	य	ण	■	ल	ल	क

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भवन संबंधी विवाद का सामना करना पड़ेगा, व्यर्थ वाद विवाद से मतभेद बढ़ेगा, वर्ष के मध्य में रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार व्यवसाय में प्रगति होगी, राज सम्मान एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार में प्रगतिहोगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख प्राप्त होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मनोबल में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा और सम्मान की प्राप्ति होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार होगा. खेलकूद के प्रति रूचि रहेगी. बचपन में स्वास्थ्य पीड़ा होगी. बाद में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. माता पिता का भक्त होगा. मनोवांछित सफलता मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

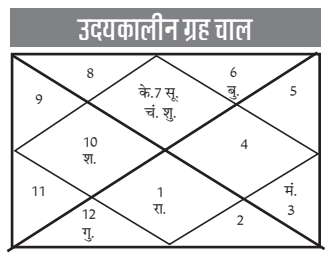

पंचांग

रा.मि. 11 संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल सप्तमीं बुधवासरे दिन 1/12, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे दिन 1/9, वरीयान योगे रात 8/17, वणिज करणे सू.उ. 5/13 सू.अ. 6/47, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6, 8, 9, 12, 1, 4 अ.रा. 7, 10, 11, 2, 3, 5 शुभांक- 8, 0, 5.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ शुक्ल सप्तमीं को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से गेहू, जौ, चना, गुड़ खांड़, शक्कर मूँगफली तेलों में तेजी होगी. वायदा विचार आज 2 बजकर 11 मिनिट से 10 मिनिट के रूख पर व्यापार करके लाभ उठाना हितकर रहेगा. भाग्यांक 1583 है.

मेष- जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता रहेगी. मांगलिक खर्च की रूपरेखा बनेगी. मित्रों एवं कुटुम्बियों से सहयोग मिलेगा. मानसिक संतोष रहेगा.

वृषभ- प्रियजन से मुलाकात उपयोगी रहेगी. ले देकर काम करवाने में नुकसान होगा. भ्रमण मनोरंजन एवं आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी. प्रयत्न करने पर लाभ होगा.

मिथुन- प्रापर्टी को लेकर चल रहे विवाद उभर सकते है. कोई पुराना काम बनेगा. दूर दराज की यात्राओं का योग है. सफलता प्राप्त होगी. रूका धन प्राप्त हो सकता है.

कर्क- अटके कार्य को समेटने में सफलता मिलेगी. कानूनी मामले सुलझेंगे. प्रयत्न करने पर लाभ होगा. निजी कार्यों की रूपरेखा तैयार होगी.

सिंह- अनुशासन की कमी से कार्यस्थल पर अव्यवस्था हो सकती है, लेनदेन के मामले सुलझ जायेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

कन्या- दूसरों के सुझावों को दिल से स्वीकार करेंगे, लाभ की संभावना बनेगी. नौकरी एवं सफलता मिलेगी. निकटजनों का मार्गदर्शन मिलेगा.

तुला- उलझे मामले चतुराई से सुलझा लेंगे. जरूरतमंदों की मदद करके खुशी मिलेगी. प्रिय व्यक्ति से मानसिक पीड़ा होगी. लाभ कम व्यय की अधिकता रहेगी.

वृश्चिक- झूठ बोलकर अपना नुकसान कर लेंगे. मेहमानों की आवाजाही बनी रहेगी. कार्यों में व्यस्तता रहेगी. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा.

धनु- आलोचना से घबराने की बजाये, डटकर मुकाबला करें. नुकसान से बच सकते हैं. मन में शांति और संतोष बना रहेगा. आय के मार्ग प्रशस्त होंगे.

मकर- लगातार नुकसान से आत्मविश्वास कमजोर पड़ सकता है, नये संपर्कों से लाभ होगा. शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा. लाभ संचित होगा. कोई बात मालुम होगी.

कुम्भ- सपने साकार करने के लिये मेहनत बढ़ाना आवश्यक है. विवादों से दूर रहें. मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. अतिथि रावणमन का योग है.

मीन- युवाओं को कैरियर की चिन्ता रहेगी. तनाव की स्थिति में फैसला लेना मुश्किल है. पराक्रम में वृद्धि होगी. नौकर चाकर एवं अधिनस्थ का सहयोग रहेगा.

SUDOKU 7082

3	9			1	4			2
1	2		6		3		5	
		5		8	7			9
	7			6	9			8
2	1			5			4	6
4			3	2			9	
9			8	4		5		
	6		9		5		2	4
8			1	7			6	3

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7081

6	9	2	3	7	4	5	8	1
3	8	5	6	2	1	7	4	9
7	4	1	8	9	5	6	2	3
2	3	9	5	4	6	8	1	7
1	7	4	9	8	3	2	6	5
5	6	8	7	1	2	9	3	4
4	5	7	1	6	8	3	9	2
8	2	3	4	5	9	1	7	6
9	1	6	2	3	7	4	5	8